उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

समाज विज्ञान विद्याशाखा, सरस्वती परिसर

शान्तिपुरम् (सेक्टर–एफ), फाफामऊ, प्रयागराज–211021

"भारतीय संस्कृति के मूल तत्व"

व्याख्यान प्रतिवेदन

समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस 18 मई, 2022 को "भारतीय संस्कृति के मूल तत्व" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता प्रो. ए.के.सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर हुआ। मुख्य वक्ता को पुष्प गुच्छ एवं अंगवस्त्रम भेंट कर स्वागत एवं सम्मानित किया गया। प्रभारी निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा एवं कार्यक्रम निदेशक प्रो. सन्तोषा कुमार द्वारा वाचिक स्वागत एवं अतिथि परिचय दिया गया। आयोजन सचिव सुनील कुमार के द्वारा विषय प्रर्वतन किया गया।

Scanned with CamScanner

मुविवि में भारतीय संस्कृति की मूल चेतना पर व्याख्यान

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में दिनांक 18 मई 202[illegible] को सरस्वती परिसर स्थित [illegible] सभागार में भारतीय संस्कृति की मूल चेतना विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता प्रो० ए० के० सिन्हा पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, [illegible] विश्वविद्यालय, [illegible] रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता [illegible] विद्याशाखा के निदेशक प्रो० [illegible] ने की। मंच पर अतिथियों का स्वागत समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी प्रो० [illegible] कुमार ने किया। संचालन डॉ० [illegible] कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ० [illegible] त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर डॉ० [illegible], डॉ० [illegible] त्रिपाठी एवं डॉ० [illegible] ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्रम प्रदान कर स्वागत किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के [illegible], शिक्षक एवं कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

व्याख्यान देते हुए मुख्य वक्ता प्रो.ए.के.सिन्हा

Scanned with CamScanner

आत्मचेतना से ही मनुष्य श्रेष्ठ– प्रोफेसर सिन्हा

मुख्य वक्ता प्रोफेसर ए० के० सिन्हा पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली ने व्याख्यान देते हुए कहा कि आत्म चेतना मनुष्य को निरन्तर गतिशील बनाए रखती है। चेतना की अभिव्यक्ति की गतिशीलता प्रदान करती है। मनुष्य पशुओं से इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि उसमें आत्म चेतना होती है। आत्म चेतना मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करती है।

प्रोफेसर सिन्हा ने कहा कि आत्म चेतना के कारण ही आगे बढ़ने की प्रवृत्ति संस्कृति का विकास करती है। इसी से मूल्य चेतना का विकास होता है। उच्च लक्ष्य को प्राप्त करना ही मूल्य चेतना है। संस्कृति मूल्यों का समुच्चय है। प्रोफेसर सिन्हा ने कहा कि चेतना से संस्कृति का स्वरूप निर्धारण होता है। भारतीय संस्कृति में चेतना के मूल्य को खोजने की प्रवृत्ति है।

भारतीय संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है प्रो० गुप्ता

अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा के निदेशक प्रो० ओ० पी० गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है। आज जहां पूरा विश्व बहुत सीमित हो गया है वहीं पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की भारतीय संस्कृति की परिकल्पना साकार हो रही है। उन्होंने कहा कि विश्व की अन्य सभी संस्कृतियां नष्ट—नष्ट हो गईं लेकिन भारतीय संस्कृति ही है जिसका वजूद अभी भी कायम है।

Scanned with CamScanner

आत्मचेतना से ही मनुष्य होता है श्रेष्ठः प्रो सिन्हा

● मुविवि मे भारतीय संस्कृति की मूल चेतना पर व्याख्यान

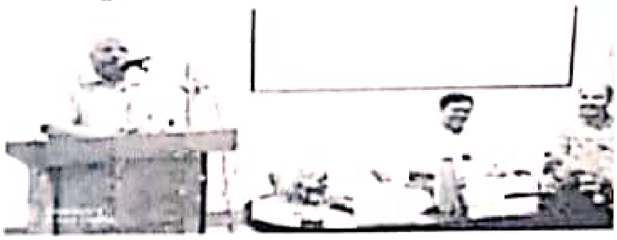

कार्यक्रम में बोलते अतिथि

[illegible]

Scanned with CamScanner

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. ए.के. सिन्हा ने कहा कि भारतीय संस्कृति की मूल्य चेतना की मूल चेतना को खोजने की प्रक्रिया है। प्रो. सिन्हा ने संस्कृति एवं सभ्यता में अन्तर बताया। उन्होंने धर्म के दस लक्षणों का वर्णन करते हुए कहा कि धर्म एक आचार संहिता है जिसको आत्मसात किये जाने की आवश्यकता है। धर्म के विभिन्न प्रकार होते हैं जैसे–सामान्य धर्म, मानव धर्म तथा राष्ट्रीय आदि है। चेतना मनुष्य के अन्दर है जो भी जीवधारी है उनमें जीवित होने का लक्षण हैं। धर्म जीवन जीने का तरीका है। सभी जीवित प्राणियों में चेतना होती है। मनुष्य में धर्म आत्म चेतना है।

मुख्य वक्ता ने यूनानी संस्कृति को बौद्धिक संस्कृति कहा। जबकि भारतीय संस्कृति चेतना के मूल्यों को खोजने की प्रवृत्ति है। संस्कृति मनुष्य के कृतित्व की व्याख्या है। जैसे–जैसे संस्कृति का विकास होता है तो सभ्यता धर्म आगे बढने के लिए प्रेरित करता है।

उन्होंने मानव के पाँच कोषों का उल्लेख किया है। मनोमय कोष उच्चतर है। मानव के लिए वे मूल्य जो हमारे जीवन रक्षा करते है। मनोमय कोष में मनोमय पूर्ण हो जाता है। यही से भक्ति प्रेम की शुरूआत मानी जाती है। ज्ञानमय या विज्ञान मय कोष वे है जहॉ से बुद्धि का दखल शुरू हो जाता है। मानवीय मूल्यो से संस्कृति बनती है। भारतीय संस्कृति परलोक वादी नही है। विश्व की अन्य संस्कृति परलोक वादी है। कर्म की स्वतंत्रता केवल मनुष्य को प्राप्त है। चेतना का उच्चतम स्तर प्राप्त होना और आत्म–साक्षात्कार होना मूल्य चेतना का विकास होता है। मुख्य वक्ता ने भारतीय समाज के विभिन्न पक्षो का विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से अत्यन्त सारगर्भित व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ओम जी गुप्ता निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा द्वारा किया गया। उन्होने भारतीय संस्कृति में निहित सिद्धान्तो एवं विचारो का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति अपनी विशिष्टता के कारण आज भी जीवित है। कार्यक्रम का संचालन सुनील कुमार सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, सहायक निदेशक/सहायक आचार्य, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने किया। कार्यक्रम में समाज विज्ञान विद्याशाखा के समस्त शिक्षक डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी, सह आचार्य, राजनीति विज्ञान, डॉ. संजय कुमार सिंह, सह आचार्य भूगोल, डॉ. अभिषेक सिंह, सहायक आचार्य भूगोल डॉ. दीपशिखा श्रीवास्तव, सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान के अलावा विभिन्न विद्याशाखा के निदेशकगण शिक्षकगण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे। इसके अलावा मीडिया से जुडे साथी भी उपस्थित रहे।

Scanned with CamScanner